पी एम श्री केंद्रीय विद्यालय वायुसेना स्थल ठाणे

विद्यालय योजना

1. स्कूल सुरक्षा और संरक्षा
2. शैक्षणिक
3. अनुशासन
4. प्रशासन
5. सह–पाठयक्रम गतिविधियाँ
6. अभिभावक, समुदाय और पूर्व विद्यार्थियों का योगदान
7. समन्वयन कौशल
8. प्रारंभिक बाल्यकाल एवं शिक्षा **तथा** बुनियादी संख्याज्ञान एवं साक्षरता
9. 21वीं सदी के कौशल
10. समावेशी शिक्षा
11. चरित्र निर्माण
12. संचार कौशल
13. मार्गदर्शन और परामर्श
14. वित्तीय योजना
15. प्राकृतिक संसाधन
16. व्यावसायिक शिक्षा
17. इलाका/क्षेत्र
18. सीखने के प्लेटफॉर्म
19. मानसिक स्वास्थ्य और शारीरिक कल्याण
20. आकर्षक परिसर

विद्यालय प्रोफाइल

सामान्य जानकारी:-

विद्यालय का नाम	पी एम श्री केंद्रीय विद्यालय वायुसेना स्थल ठाणे	क्षेत्र	मुंबई

विद्यालय कोड	34049	संबद्धता क्रमांक	1100037
स्थापना वर्ष	1981	सेक्टर	रक्षा
भौगोलिक स्थिति (निर्देशांक)	72.990516 19.240225		
क्षेत्रफल (निर्मित)		कुल क्षेत्रफल	3.17 हेक्टेयर
प्राचार्य का नाम	श्री वेद प्रकाश गौतम	लैंडलाइन (o)- 022-25868447 ई–मेल -kvthane@gmail.com	
कार्यभार ग्रहण करने की तिथि	वर्तमान के. वि. - 30/09/2023	वर्तमान पद – प्राचार्य - 30/09/2023	
उस व्यक्ति का नाम जिससे प्राचार्य की अनुपस्थिति में संपर्क किया जा सकता है ।	श्रीमती अंजलि परचाके	संपर्क : 9404012126	
अध्यक्ष का नाम	ग्रुप कैप्टन परमजीत सिंह मुल्तानी	स्टेशन कमांडर , वायु सेना स्थल ठाणे	

परीक्षा परिणाम - 2023-24 (IX – XII)

कक्षा	उपस्थिति पंजी	भाग लिया	उत्तीर्ण	उतीर्ण %	प्रदर्शन सूचकांक	पद धारकों का नाम प्रतिशत सहित
X	76	76	76	100 %	70.82	सुकृत श्रीवास्तव 95% तान्या सिंह 94.4% आरव छाबरा 94.4%
XII (विज्ञान)	52	52	52	100%	65.72	तनीषा साहू 94.4% प्रचीति दिलीप जटोल 93% भाव्या 92.8%
XII (वाणिज्य)	15	15	12	80	55.67	तनु ग्रेवाल 95% श्रुति भदौरिया 93.4% भोईर स्वराली 89%
IX	98	91	92.86	**92.85**	लागू नहीं	
XI (विज्ञान)	99	68	68.7	**65.3**	लागू नहीं	

SWOT (सबल पक्ष, कमजोर पक्ष, अवसर और चुनौतियाँ) विश्लेषण: -

विद्यालय का सशक्त पक्ष : -

नवाचार को प्राथमिक महत्व दिया जाता है और विद्यार्थियों को क्षेत्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है ।

उन्हें खेल, कला, साहित्यिक कार्य, चित्रकला आदि में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करके उनके व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास को अधिक महत्व दिया जा रहा है।

- शिक्षकों के बीच सहयोगात्मक कार्य संस्कृति।
- अच्छा माहौल और शांतिपूर्ण वातावरण।
- अच्छी परिवहन कनेक्टिविटी।
- हितधारकों के साथ सौहार्दपूर्ण संबंध
- कर्मचारियों के बीच अच्छी समझ और सहयोग।
- पीने योग्य नल के पानी की उपलब्धता।
- अच्छे पारस्परिक संबंध।

विद्यालय का कमजोर पक्ष :-

- शिक्षकों या विद्यार्थियों के बीच नवाचारों के लिए कोई अटल टिंकरिंग प्रयोगशाला नहीं है।
- मानसिकता में बदलाव।
- कई विद्यार्थी पहली पीढ़ी के शिक्षार्थी हैं।
- कई विद्यार्थियों की शैक्षणिक आकांक्षाएँ कम/नहीं हैं ।
- बुनियादी ढाँचा विकास की प्रक्रिया में है।
- नवीन शिक्षा पद्धतियों का अभ्यास करने के लिए प्रेरणा की आवश्यकता है।

अवसरः-

- विद्यालय में व्यावसायिक उन्नयन एक सतत प्रक्रिया है ।
- विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से शिक्षण संकाय की क्षमताओं को सशक्त एवं मजबूत किया जाता है।
- नवाचार के उन्नयन हेतु प्रोत्साहित किया जाता है और सराहना की जाती है।
- विद्यार्थियों को संकुल, क्षेत्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेने के अवसर प्रदान किए जाते हैं।

3. शैक्षणिक

- **शैक्षणिक उपलब्धि में सुधार:** – हम शैक्षणिक प्रगति के लिए लक्ष्य निर्धारित करके और इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए रणनीति विकसित करके शैक्षणिक उपलब्धि में सुधार को प्राथमिकता दे सकते हैं। इसमें निम्न बिन्दुओं को शामिल किया जा सकता है–
  - प्रभावी शिक्षण तकनीकों को विकसित करने पर ध्यान केंद्रित करना।
  - निर्देशात्मक निर्णय लेने के लिए आंकड़ों का उपयोग करना।
  - डिजिटल लाइब्रेरी का उपयोग करके छात्रों में पढ़ने की आदत विकसित करना।
  - उपलब्धि प्रदर्शन के लिए प्रयास करने वाले विद्यार्थियों का सहयोग करने के लिए लक्ष्य आधारित हस्तक्षेप करना।

- **व्यावसायिक विकास:** – हम शिक्षकों के लिए वर्तमान में चल रहे व्यावसायिक विकास को प्राथमिकता दे सकते हैं, जिससे वे शिक्षा के क्षेत्र में हो रहे नवीनतम शोध और रुझानों से अद्यतन रह सकें और अपनी शिक्षण तकनीकों को विकसित कर सकें। इसमें निम्न बिंदु शामिल हो सकते हैं–
  - सहयोग, प्रशिक्षण एवं सलाह के अवसर प्रदान करना।
  - शिक्षकों और प्राचार्य के लिए 50 सीपीडी घंटे समर्पित किए जाने चाहिए।

- **पाठ्यक्रम विकास:** – हम एक कठोर और व्यापक पाठ्यक्रम विकसित करने पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं जो शिक्षण के राष्ट्रीय या अंतर्राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप हो, और जो विद्यार्थियों के लिए प्रासंगिक होने के साथ–साथ आकर्षक भी हो। इसमें निम्न बिंदु शामिल हो सकते हैं–
  - पाठ्यक्रम का मानचित्रण।
  - शिक्षकों को संसाधन विकसित करने और साझा करने के अवसर प्रदान करना।
  - पाठ्यक्रम में होने वाले निर्णयों / बदलावों के विषय में सूचित करने के लिए आंकड़ों का उपयोग करना।

- **तकनीकी एकीकरण:** – हम सीखने और सिखाने की प्रक्रिया में प्रौद्योगिकी के एकीकरण को प्राथमिकता दे सकते हैं,उन तकनीकी उपकरणों और संसाधनों तक पहुँच प्रदान कर सकते हैं जो सीखने को बढ़ाते हैं और विद्यार्थियों को संलग्न होने के अवसर प्रदान करते हैं। इसमें निम्न बिन्दुओं को शामिल किया जा सकता है –

- प्रौद्योगिकी के उपयोग से व्यावसायिक विकास प्रदान करना ।
- प्रौद्योगिकी के बुनियादी ढांचे और संसाधनों में निवेश।

विद्यार्थी सहायता सेवाएं:– विद्यार्थियों को सफलता प्राप्त करने में सहायता करने के उद्देश्य से हम उन्हें कई प्रकार की सहायता सेवाएं प्रदान कर सकते हैं, जैसे–

- शिक्षण, परामर्श, या शैक्षणिक कोचिंग।
- एक ऐसी व्यापक प्रणाली विकसित करना जो विद्यार्थी सहायता सेवाओं को अधिक सक्षम बना सके ।

• वे विद्यार्थी जिन्हें अतिरिक्त सहायता की आवश्यकता है उनकी सहायता के लिए आंकड़ों का उपयोग करके लक्ष्य आधारित हस्तक्षेप करना ।

उच्च परीक्षा तैयारी मॉड्यूल :- आमतौर पर यह देखा गया है कि दसवीं कक्षा उत्तीर्ण करने के बाद, विद्यार्थियों की एक बड़ी संख्या डमी स्कूलों में ड्रॉप या प्रवेश लेती है। हमें कोचिंग संस्थानों के द्वारा प्रयोग की जाने वाली ऐसी प्रविधियों को केन्द्रीय विद्यालयों के पाठ्यक्रम में शामिल करने का प्रयास करना चाहिए जिसकी सहायता से ऐसे विद्यार्थियों को एन ई ई टी, जे ई ई की तैयारी की प्रेरणा प्राप्त हो सके ।

- **Calp (शैक्षणिक हानि मुआवजा कार्यक्रम) : –** विद्यार्थियों द्वारा विद्यालय के बाहर आयोजित होने वाले क्षेत्रीय और राष्ट्रीय स्तर की विभिन्न गतिविधियों / प्रतियोगिताओं / सांस्कृतिक कार्यक्रमों, खेल / स्काउट और गाइड / प्रदर्शनियां में भाग लेने के लिए कारण शैक्षणिक विषयों में होने वाले विद्यार्थियों के अध्ययन के नुकसान की भरपाई के लिए इस कार्यक्रम को विद्यालय स्तर पर लागू किया जाता है ।
- **अभिभावक एवं सामुदायिक जुड़ाव : –** हम शैक्षणिक कार्यक्रम में माता–पिता और समुदाय को शामिल करने को प्राथमिकता दे सकते हैं जैसे–
    - उन्हें भागीदारी और प्रतिक्रिया के अवसर प्रदान करना।
    - समाज एवं अभिभावकों की ऐसी साझेदारी का निर्माण जो विद्यार्थियों के सीखने की प्रक्रिया में सहायक हो ।
    - एक व्यापक योजना विकसित करना जिसमें अभिभावकों का जुड़ाव और समाज की भागीदारी सुनिश्चित की जा सके ।
    - समय के बेहतर और अधिकतम उपयोग को सुनिश्चित करना ।

4. प्रशासन

नेतृत्व विकास : – हम अपने स्वयं के नेतृत्व विकास को प्राथमिकता दे सकते हैं, पेशेवर विकास के कार्यक्रमों में भाग ले सकते हैं और अपने नेतृत्व कौशल को बढ़ाने के लिए अनुभवी प्रशासकों से सलाह ले सकते हैं।

टीम बिल्डिंग : – हम एक मजबूत प्रशासनिक टीम बनाने पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं जो विद्यालय के अपेक्षित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए सहयोगात्मक रूप से काम करती है।

संचार : – प्राचार्य के रूप में हम एक ऐसी प्रभावी संचार रणनीति विकसित करें जिससे सभी हितधारकों को सूचित किया जाए और विद्यालय के प्रशासनिक निर्णयों और गतिविधियों में उनकी भागीदारी सुनिश्चित की जा सके ।

डेटा विश्लेषण : – हम निर्णय लेने और विद्यालय के लक्ष्यों की दिशा में प्रगति की निगरानी करने के लिए स्कूल डेटा के विश्लेषण को प्राथमिकता दे सकते हैं।

संसाधन आवंटन : – हम यह सुनिश्चित करने के लिए काम कर सकते हैं कि धन, कर्मचारियों और सुविधाओं सहित संसाधनों को इस तरह से आवंटित किया जाए जो विद्यालय के विजन और लक्ष्यों का प्राप्त करने की दिशा में कार्य करता हो।

.

नीति विकास : – हम ऐसी नीतियों और प्रक्रियाओं को विकसित कर सकते हैं जो विद्यालय के बजट, मानव संसाधन और विद्यार्थियों से सम्बंधित मामलों के प्रभावी प्रशासन का समर्थन करती हैं ।

व्यावसायिक विकास : – हम प्रशासनिक कर्मचारियों के व्यावसायिक विकास के संवर्धन हेतु ऐसे अवसर उपलब्ध करा सकते हैं, जिससे उन्हें शिक्षा प्रशासन में सर्वोत्तम प्रथाओं और वर्तमान अनुसंधान के साथ अद्यतन रहने हेतु सक्षम बनाया जा सके।

राजभाषा हिंदी का विकास: -

सामुदायिक जुड़ाव : – विद्यालय के विजन और लक्ष्यों का समर्थन करने के लिए व्यवसायों, संगठनों और माता–पिता सहित समुदाय के साथ मजबूत साझेदारी बनाने के लिए काम कर सकते हैं।

5. विद्यालय–सुरक्षा और संरक्षा

जोखिम आकलन:- विद्यालय समुदाय की सुरक्षा और संरक्षा के लिए संभावित खतरों, जैसे प्राकृतिक आपदाओं, हिंसा या साइबर हमलों की पहचान करने के लिए विद्यालय एक व्यापक जोखिम आकलन का कार्य कर सकता है ।

नीतियाँ और कार्यविधियाँ: - विद्यालय आपात स्थितियों का जवाब देने और सुरक्षित परिसर बनाए रखने के लिए स्पष्ट नीतियों और प्रक्रियाओं का विकास और कार्यान्वयन कर सकता है , जैसे –

- लॉकडाउन के लिए प्रोटोकॉल/कोई अन्य स्थिति
- सुरक्षित निकासी
- आगंतुक प्रबंधन।

प्रशिक्षण और अभ्यास:–विद्यालय आपातकालीन परिस्थितियों के प्रति प्रतिक्रिया प्रदर्शन हेतु कर्मचारियों और छात्रों को नियमित प्रशिक्षण प्रदान करेगा तथा विभिन्न परिदृश्यों पर प्रतिक्रिया करने के लिए नियमित अभ्यास कार्यक्रम आयोजित करेगा।

भौतिक सुरक्षा उपाय:- विद्यालय निम्न भौतिक सुरक्षा उपायों को लागू करेगा जैसे –

- सीसीटीवी कैमरे
- प्रवेश नियंत्रण प्रणाली,
- परिसर में प्रवेश की निगरानी और नियंत्रण के लिए सुरक्षा कर्मी।

साइबर सुरक्षा:– विद्यालय अपने डिजिटल बुनियादी ढांचे और डेटा की सुरक्षा के लिए जरूरी कदम उठाएगा, जिसमें फायरवॉल, एंटीवायरस सॉफ्टवेयर और कर्मचारियों और विद्यार्थियों के लिए साइबर सुरक्षा प्रशिक्षण शामिल होगा।

संकट सम्बन्धी संचार:- विद्यालय एक संकट संचार योजना विकसित करेगा, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि आपातकालीन स्थितियों के दौरान अभिभावकों और अन्य हितधारकों को सूचित और अद्यतन किया जा सके।

सामुदायिक सहभागिता :- स्कूल सुरक्षा एवं संरक्षा के लिए समन्वित दृष्टिकोण विकसित करने हेतु स्कूल स्थानीय कानून प्रवर्तन एजेंसियों और समुदाय के अन्य हितधारकों के साथ मिलकर काम करेगा।

निरंतर सुधार : – 'स्कूल सुरक्षा और सुरक्षा आपदा प्रबंधन योजना' बदलती परिस्थितियों में भी प्रभावी और उत्तरदायी बना रहे, इसके लिए हम नियमित रूप से इस योजना की समीक्षा और अद्यतनीकरण करते रहेंगे ।

6. सह–पाठयक्रम गतिविधियाँ

छात्रों की आवश्यकताओं और रुचियों का आकलन: -छात्रों की ज़रूरतों का आकलन करें और विभिन्न प्रकार की गतिविधियों में उनकी रुचि का पता लगाने के लिए सर्वेक्षण करें। इससे स्कूल को एक ऐसा पाठ्यक्रम सहगामी कार्यक्रम विकसित करने में मदद मिलेगी जो छात्रों की ज़रूरतों और रुचियों के अनुरूप हो।

सीसीए कार्यक्रमों के लिए लक्ष्य और उद्देश्य निर्धारित करें:- सीसीए कार्यक्रमों के लिए लक्ष्यों और उद्देश्यों की पहचान करें, जैसे–

- शारीरिक फिटनेस को बढ़ावा देना।
- टीमवर्क और नेतृत्व कौशल का निर्माण करना।
- कलात्मक अभिव्यक्ति के अवसर प्रदान करना।

सीसीए कार्यक्रमों के कार्यान्वयन के लिए योजना विकसित करना:- प्रस्तुत की जाने वाली गतिविधियों के प्रकार, कार्यक्रमों को लागू करने के लिए आवश्यक संसाधनों और कार्यान्वयन की समय–सीमा की पहचान करें। स्टाफिंग, शेड्यूलिंग और बजट जैसे कारकों पर विचार करें।

सीसीए समन्वयकों, सद्राध्यक्षों/सह–सद्राध्यक्षों के लिए प्रशिक्षण और सहायता प्रदान करें : –सुनिश्चित करें कि सीसीए समन्वयक, सद्राध्यक्षों/सह–सद्राध्यक्षों सुरक्षित और प्रभावी सीसीए कार्यक्रम प्रदान करने के लिए प्रशिक्षित और सुसज्जित हैं। उन्हें अपने प्रशिक्षण और शिक्षण कौशल को बेहतर बनाने में मदद करने के लिए निरंतर समर्थन और पेशेवर सहायता प्रदान करें।

विद्यार्थियों और अभिभावकों के बीच सीसीए कार्यक्रमों को बढ़ावा देना:–सीसीए कार्यक्रमों का प्रचार–प्रसार हो और विद्यार्थियों और अभिभावकों को इनमें भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करें। हम कार्यक्रमों को बढ़ावा देने और उत्साह पैदा करने के लिए विभिन्न संचार चैनलों का उपयोग कर सकते हैं। जैसे–

• समाचार पत्र।

• सोशल मीडिया।
• दैनिक विद्यालय प्रार्थना–सभा ।

सीसीए कार्यक्रम की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करें: - सीसीए कार्यक्रम के लक्ष्यों और उद्देश्यों को पूरा करने एवं इसकी प्रभावशीलता निर्धारित करने के लिए नियमित रूप से इसका मूल्यांकन करें। हम आवश्यकतानुसार सुधार और समायोजन करने के लिए विद्यार्थियों, अभिभावकों और सीसीए समन्वयकों, सद्राध्यक्षों/सह–सद्राध्यक्षों से मिलने वाले फीडबैक का उपयोग कर सकते हैं।

7. माता–पिता, समुदाय और पूर्व विद्यार्थियों का योगदान

संचार: - माता–पिता और समुदाय के सदस्यों के साथ स्पष्ट संचार चैनल स्थापित करें, जैसे–

- • नियमित समाचार पत्र।
- • सोशल मीडिया अपडेट।
- • अभिभावक–शिक्षक बैठकें।
- • पूर्व विद्यार्थी बैठक।

माता–पिता और सामुदायिक सलाहकार समूह: - विद्यालय की विकास योजना के जिन क्षेत्रों पर फीडबैक देने की आवश्यकता है उन क्षेत्रों की पहचान करने में सहायता के लिए अभिभावक और समुदाय सलाहकार समूह स्थापित करें।

स्वयं सेवा:

- माता–पिता और समुदाय के सदस्यों को "विद्यांजलि" पहल के तहत विद्यालय की विकास योजना का समर्थन करने के लिए अपना समय और संसाधन स्वेच्छा से देने के लिए प्रोत्साहित करें, जैसे कि –
- सामान्य स्तर की सेवाएँ– मेंटरशिप, ट्यूशन। कैरियर काउंसलिंग आदि।
- प्रायोजन गतिविधियाँ – चिकित्सा सहायता, शैक्षिक संसाधन आदि।
- अवसंरचनात्मक सेवाएँ – निर्माण कार्य से संबंधित सेवाएँ।

साझेदारी निर्माण: - स्कूल की विकास योजना के लिए अतिरिक्त संसाधन और सहायता प्रदान करने के लिए स्थानीय व्यवसायों, संगठनों और संस्थाओं के साथ साझेदारी स्थापित करना।

धन–संग्रहण : -

- स्कूल की विकास योजना के लिए धन जुटाने के लिए एक धन–संग्रहण की योजना विकसित करें, जैसे –
- कार्यक्रमों की मेजबानी करना।
- अनुदान के लिए आवेदन करना।
- माता–पिता और समुदाय के सदस्यों से दान मांगना।

सामुदायिक पहुँच: - विद्यालय की विकास योजनाओं को बढ़ावा देने तथा विद्यालय के लक्ष्यों और उद्देश्यों की पूर्ति के लिए समर्थन जुटाने के लिए समुदाय तक पहुंचने का प्रयास करें ।

मान्यता और समारोह: - विद्यालय और उसके विद्यार्थियों की उपलब्धियों को सेलिब्रेट करें तथा विद्यालय की विकास योजना में अभिभावकों और समुदाय के सदस्यों के योगदान को मान्यता दें।

8. अखंडता कौशल्य

आवश्यकताओं का आकलन करें: - विद्यालय में एकीकरण स्तर की वर्तमान स्थिति का पता लगाने के लिए ज़रूरतों का आकलन करें, किसी भी कमी या सुधार की ज़रूरत वाले क्षेत्रों की पहचान करें। इसमें सर्वेक्षण, फ़ोकस समूह या अन्य डेटा–एकत्रीकरण विधियाँ शामिल हो सकती हैं।

आचार संहिता विकसित करें: - हमें एक ऐसी आचार संहिता विकसित करनी चाहिए जो उन मूल्यों और सिद्धांतों को स्पष्ट रूप से रेखांकित करे जिन्हें स्कूल समुदाय से बनाए रखने की अपेक्षा की जाती है, जैसे ईमानदारी, सम्मान, निष्पक्षता और जिम्मेदारी का भाव । हमें केवीएस शिक्षा संहिता के अनुच्छेद **59** और **60** के अनुसार शिक्षकों और विद्यार्थियों के लिए बनी आचार संहिता का सख्ती से पालन करना चाहिए।

पाठ्यक्रम में सत्यनिष्ठा से संबंधित विषयों को शामिल करें: - हम विद्यालय के परोक्ष पाठ्यक्रम में सत्यनिष्ठा से संबंधित विषयों और गतिविधियों को विकसित और एकीकृत कर सकते हैं, जिससे विद्यार्थियों को नैतिक व्यवहार के महत्व को समझने और नैतिक निर्णय लेने में मदद मिलेगी।

व्यावसायिक विकास प्रदान करें:--शिक्षकों और कर्मचारियों के लिए निम्नलिखित विषयों पर व्यावसायिक विकास के अवसर प्रदान करें –

- • नैतिक नेतृत्व,
- • सत्यनिष्ठा की संस्कृति का निर्माण।
- • सत्यनिष्ठा से संबंधित मुद्दों पर प्रतिक्रिया देना।

रिपोर्टिंग तंत्र स्थापित करें:– विद्यार्थियों और कर्मचारियों के लिए सत्यनिष्ठा से संबंधित विविध विषयों की रिपोर्ट करने के लिए रिपोर्टिंग तंत्र स्थापित करें, तथा इन तंत्रों के बारे में विद्यालय समुदाय के सभी सदस्यों को स्पष्ट रूप से सूचित किया जाए।

सत्यनिष्ठा उल्लंघनों पर प्रतिक्रिया दें: - सत्यनिष्ठा उल्लंघनों पर प्रतिक्रिया देने के लिए स्पष्ट नीतियाँ और प्रक्रियाएँ विकसित करें, तथा सुनिश्चित करें कि इन्हें पूरे विद्यालय में सुसंगत और निष्पक्ष रूप से लागू किया जाए।

नैतिक व्यवहार को पहचानें और पुरस्कृत करें**:** उन छात्रों और कर्मचारियों के लिए मान्यता और पुरस्कार की व्यवस्था हो जो अनुकरणीय नैतिक व्यवहार प्रदर्शित करते हैं, जिससे स्कूल समुदाय के भीतर ईमानदारी के महत्व को सुदृढ़ करने में मदद मिलती है।

9. बुनियादी संख्याज्ञान एवं साक्षरता (एफ एल एन)

बुनियादी संख्याज्ञान एवं साक्षरता: -जादुई पिटारा

इसमें प्लेबुक, खिलौने, पहेलियाँ, पोस्टर, फ़्लैश कार्ड, कहानी की किताबें, कार्यपत्रक के साथ–साथ स्थानीय संस्कृति, सामाजिक संदर्भ और भाषाओं को दर्शाया गया है, जिसे उत्सुकता बढ़ाने और बुनियादी स्तर पर शिक्षार्थियों की विविध आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। यह **13** भारतीय भाषाओं में उपलब्ध है।

10. 21**वीं सदी के कौशल**

परियोजना–आधारित शिक्षण: - परियोजना–आधारित शिक्षण को अमल में लाएं करें जो विद्यार्थियों को समस्याओं को उनके वास्तविक स्वरूप में समझने और उन पर काम करने, दूसरों के साथ सहयोग करने, तथा आलोचनात्मक सोच और समस्या–समाधान कौशल को लागू करने की अनुमति देता है।

प्रौद्योगिकी एकीकरण: - डिजिटल साक्षरता, रचनात्मकता और नवाचार को बढ़ावा देने के लिए शिक्षण और सीखने में प्रौद्योगिकी उपकरणों और संसाधनों को एकीकृत करना।

संचार कौशल: - सहयोगात्मक गतिविधियों, प्रस्तुतियों, वाद–विवाद और लेखन कार्यों के माध्यम से मौखिक और लिखित दोनों स्वरूपों में विद्यार्थियों के संचार कौशल का विकास करना।

सृजनात्मकता और नवाचार: - विचार मंथन सत्रों, अभिकल्पना के माध्यम से और अन्य रचनात्मक समस्या–समाधान रणनीतियाँ की सहायता से विद्यार्थियों में रचनात्मकता और नवाचार को प्रोत्साहित करें ।

आलोचनात्मक चिंतन और समस्या समाधान: - सूचना के विश्लेषण, मूल्यांकन और संश्लेषण के अवसर प्रदान करके विद्यार्थियों में आलोचनात्मक सोच और समस्या समाधान कौशल को बढ़ावा देना।

वैश्विक जागरूकता: - विद्यार्थियों को विविध संस्कृतियों और दृष्टिकोणों से परिचित कराकर तथा अंतर–सांस्कृतिक संचार और सहयोग के अवसर प्रदान करके उनकी वैश्विक जागरूकता का विकास करना।

स्व–निर्देशित शिक्षण: - विद्यार्थियों में अपने सीखने के प्रति विश्वास निर्मित करने , लक्ष्य निर्धारित करने और अपनी प्रगति की स्वयं निगरानी करने के अवसर प्रदान करके उन्हें स्व–निर्देशित सीखने के लिए प्रोत्साहित करें।

11. समावेशी शिक्षा

समावेशन के लिए स्कूल–व्यापी दृष्टिकोण की स्थापना: - प्राचार्य के रूप में मैं, स्टाफ और हितधारकों के साथ मिलकर समावेशिता के लिए एक विद्यालय–व्यापी दृष्टिकोण विकसित कर सकता हूँ, जो सभी शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं को प्राथमिकता देता हो और एक विविधतापूर्ण समावेशी संस्कृति का निर्माण करता हो ।

सहयोगी टीम का निर्माण: - हम एक सहयोगी टीम स्थापित कर सकते हैं जिसमें शिक्षक, सहायक कर्मचारी, अभिभावक और समुदाय के सदस्य शामिल होंगे जो स्कूल की समावेशी शिक्षा योजना को विकसित करने और कार्यान्वित करने में मदद करेंगे।

सीखने में आने वाली बाधाओं की पहचान करना और उनका समाधान करना: - मैं सीखने में आने वाली बाधाओं की पहचान करने के लिए कर्मचारियों के साथ मिलकर काम कर सकता हूँ और उन्हें दूर करने के लिए समायोजन या संशोधन प्रदान करना, अतिरिक्त सहायता प्रदान करना, या व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षण विधियों को अनुकूलित करना जैसी रणनीतियाँ विकसित कर सकता हूँ ।

व्यावसायिक विकास प्रदान करना: -

- एक टीम लीडर के रूप में मैं यह सुनिश्चित कर सकता हूँ कि शिक्षकों और कर्मचारियों को समावेशी शिक्षा प्रथाओं पर केंद्रित पेशेवर विकास के अवसर मिले , जैसे –
- • सीखने के लिए सार्वभौमिक डिजाइन।
- • विभेदित निर्देश।
- • सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षण।

समावेशी शिक्षण वातावरण का निर्माण: - हम समावेशी शिक्षण वातावरण बनाने के लिए काम कर सकते हैं जो सभी विद्यार्थियों की आवश्यकताओं का समर्थन करता हो, जैसे भौतिक पहुंच सुनिश्चित करना, विभिन्न प्रारूपों में सामग्री उपलब्ध कराना, और शिक्षण का समर्थन करने के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग करना।

परिवारों और समुदायों के साथ जुड़ना**:** - हम विद्यालय की समावेशी शिक्षा योजना में परिवारों और समुदायों को शामिल करने के लिए काम कर सकते हैं, जैसे –

• फीडबैक और इनपुट मांगकर।
• भागीदारी के अवसर प्रदान करके।
• विद्यार्थियों की शिक्षा का समर्थन करने वाली साझेदारियाँ बनाना।

प्रगति की निगरानी और मूल्यांकन: हमें विद्यालय के समावेशी शिक्षा लक्ष्यों की दिशा में प्रगति की निगरानी और मूल्यांकन करने के लिए तंत्र स्थापित करना चाहिए, जैसे –

• विद्यार्थियों के परिणामों पर नज़र रखना,
• समावेशी प्रथाओं की नियमित समीक्षा करना।
• निर्णय लेने के लिए डेटा का उपयोग करना।

12. चरित्र निर्माण

विद्यालय के मूल मूल्यों को परिभाषित करें: चरित्र निर्माण योजना बनाने में पहला कदम विद्यालय के मुख्य मूल्यों की पहचान करना है। इन मूल्यों को विद्यालय के उद्देश्य और दृष्टिकोण को प्रतिबिंबित करना चाहिए और सभी हितधारकों के लिए एक मार्गदर्शक के रूप में काम करना चाहिए।

आचार संहिता विकसित करें: आचार संहिता विद्यालय समुदाय के सभी सदस्यों के लिए व्यवहार और आचरण की अपेक्षाओं को रेखांकित करती है। इस संहिता को मूल मूल्यों के साथ जोड़ा जाना चाहिए और छात्रों, कर्मचारियों और अभिभावकों को बताया जाना चाहिए। हमें केवीएस शिक्षा संहिता के अनुसार आचार संहिता का पालन करना चाहिए।

सेवा के अवसर उपलब्ध कराएँ: सेवा के विविध अवसर, जैसे कि स्वयंसेवा और सामुदायिक सेवा, विद्यार्थियों को सहानुभूति और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना विकसित करने में मदद कर सकते हैं। विद्यालय स्थानीय संगठनों के साथ काम कर सकता है या अपनी खुद की सेवा परियोजनाएँ बना सकता है जो विद्यालय के मूल मूल्यों के साथ संरेखित हों।

चरित्र शिक्षा को पाठ्यक्रम में शामिल करें: - ईमानदारी, सम्मान और जिम्मेदारी जैसे विषयों को पाठों और गतिविधियों में शामिल करके चरित्र शिक्षा को पाठ्यक्रम में एकीकृत किया जा सकता है। शिक्षक भी विद्यार्थियों के साथ अपनी बातचीत एवं शिक्षण प्रविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों में इन व्यवहारों का अनुरोपण कर सकते हैं।

कर्मचारियों के लिए व्यावसायिक विकास प्रदान करना : – व्यावसायिक विकास के अवसर कर्मचारियों को यह सीखने में मदद कर सकते हैं कि चरित्र निर्माण को उनके शिक्षण अभ्यासों में कैसे एकीकृत किया जाए। इसमें चरित्र शिक्षा रणनीतियों और तकनीकों पर कार्यशालाएँ या प्रशिक्षण सत्र शामिल हो सकते हैं। वे खुद को रोल मॉडल के रूप में प्रस्तुत कर सकते हैं।

सकारात्मक व्यवहार को पहचानें और उसकी प्रशंसा करें: –सकारात्मक व्यवहार को पहचानना और उसकी प्रशंसा करना चरित्र निर्माण के महत्व को मजबूत कर सकता है और विद्यार्थियों को मूल्यवान और सराहनीय महसूस करने में मदद कर सकता है। इसमें पुरस्कार समारोह, प्रशंसा या स्कूल न्यूज़लेटर में शामिल करना हो सकता है।

माता-पिता और समुदाय को शामिल करें: –चरित्र निर्माण एक सहयोगात्मक प्रयास है जिसमें माता-पिता और व्यापक समुदाय शामिल होते हैं।विद्यालय कार्यशालाएँ या कार्यक्रम आयोजित कर सकता है जिसमें माता-पिता और समुदाय को चरित्र निर्माण गतिविधियों में शामिल किया जा सके।

13. संचार कौशल

संचार उद्देश्य: – संचार कौशल योजना में संचार कौशल से संबंधित स्पष्ट और मापनीय उद्देश्यों को रेखांकित किया जाना चाहिए, जिन्हें विद्यालय प्राप्त करना चाहता है, जैसे –

- स्टाफ संचार में सुधार करना।
- माता-पिता की भागीदारी बढ़ाना।
- विद्यार्थी नेतृत्व कौशल विकसित करना।

लक्षित दर्शक: –संचार कौशल योजना में संचार के लिए विशिष्ट लक्षित दर्शकों की पहचान की जानी चाहिए, जैसे कि कर्मचारी, अभिभावक, विद्यार्थी और समुदाय के सदस्य, और प्रत्येक समूह तक पहुंचने के लिए सबसे प्रभावी चैनलों और तरीकों पर विचार किया जाना चाहिए।

संचार चैनल: –संचार कौशल योजना में प्रत्येक लक्षित दर्शकों के साथ संवाद करने के लिए सबसे प्रभावी चैनलों की पहचान होनी चाहिए, जैसे समाचार पत्र, सोशल मीडिया, ईमेल, वेबसाइट या आमने–सामने की बैठकें।

संचार सामग्री: –संचार कौशल योजना में संप्रेषित की जाने वाली सामग्री के प्रकारों को रेखांकित किया जाना चाहिए, जैसे विद्यालय के कार्यक्रमों, आयोजनों या पहलों, विद्यार्थियों की उपलब्धियों या अभिभावकों के लिए संसाधनों पर अद्यतन जानकारी।

संचार शैली: –संचार कौशल योजना में संचार के लहजे, शैली और भाषा पर विचार किया जाना चाहिए, तथा यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि यह स्पष्ट, संक्षिप्त और लक्षित श्रोताओं के लिए सुलभ हो।

14. मार्गदर्शन और परामर्श

एक व्यापक मार्गदर्शन और परामर्श कार्यक्रम की स्थापना: –हम एक व्यापक मार्गदर्शन और परामर्श कार्यक्रम के विकास को प्राथमिकता दे सकते हैं जो राष्ट्रीय या अंतर्राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप हो, और जो विद्यार्थियों की शैक्षणिक, सामाजिक–भावनात्मक और कैरियर विकास आवश्यकताओं को संबोधित करता हो।

योग्य परामर्शदाताओं तक पहुँच प्रदान करना: –एक मुख्य सलाहकार के रूप में मैं अनुबंध के आधार पर योग्य और प्रशिक्षित परामर्शदाताओं को नियुक्त करने को प्राथमिकता देता हूँ। मैं नियमित शिक्षकों को मार्गदर्शन और परामर्श में डिप्लोमा कोर्स करने के लिए प्रेरित और सुविधा प्रदान करूँगा ताकि वे विद्यार्थियों को व्यक्तिगत और समूह परामर्श सेवाएँ प्रदान कर सकें एवं विद्यार्थियों की सफलता का समर्थन करने के लिए अन्य शिक्षकों और अभिभावकों के साथ सहयोग कर सकें।

पाठ्यक्रम में परामर्श को शामिल करना: –प्राचार्य विभिन्न शैक्षिक कार्यक्रमों में मार्गदर्शन और परामर्श सम्बन्धी पाठ्यक्रम को शामिल करने को प्राथमिकता दे सकते हैं, जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि विद्यार्थियों को अपने सामाजिक–भावनात्मक और कैरियर–संबंधी कौशल विकसित करने के लिए नियमित अवसर प्राप्त हों।

माता–पिता/अभिभावक को शिक्षा और सहायता प्रदान करना: –प्राचार्य माता–पिता को शिक्षा और सहायता प्रदान करने को प्राथमिकता दे सकते हैं, जिससे वे अपने बच्चों के सामाजिक–भावनात्मक विकास को बेहतर ढंग से समझ सकें और बच्चों की शिक्षा में भागीदार के रूप में उनकी भूमिका में उनकी भूमिका निभा सकें।

सकारात्मक विद्यालय वातावरण का निर्माण : –हम एक सकारात्मक विद्यालय वातावरण के निर्माण को प्राथमिकता दे सकते हैं जो सभी विद्यार्थियों के लिए अपनेपन, सुरक्षा और सम्मान की भावना को बढ़ावा देता है, और विद्यार्थियों के सामाजिक–भावनात्मक विकास का समर्थन करता है।

शैक्षणिक रूप से संकटग्रस्त विद्यार्थियों के लिए सहायता प्रदान करना : –प्राचार्य संकटग्रस्त विद्यार्थियों की पहचान करने और उन्हें सहायता प्रदान करने को प्राथमिकता दे सकते हैं, जैसे कि वे विद्यार्थी जो शैक्षणिक या सामाजिक–भावनात्मक कठिनाइयों का सामना कर रहे हैं, या वे जो विद्यालय के बाहर महत्वपूर्ण जीवन–सम्बन्धी चुनौतियों का सामना कर रहे हैं।

सामुदायिक संसाधनों के साथ साझेदारी स्थापित करना : –हम सामुदायिक संसाधनों के साथ साझेदारी स्थापित करने को प्राथमिकता दे सकते हैं, जैसे –

- मानसिक स्वास्थ्य प्रदाता।
- सामाजिक सेवा एजेंसियाँ।
- संकटग्रस्त विद्यार्थियों के लिए अतिरिक्त सहायता और संसाधन प्रदान करने के लिए युवा संगठन।

15.अनुशासन

सकारात्मक विद्यालय संस्कृति का निर्माण : –हम एक सकारात्मक विद्यालय संस्कृति स्थापित करने के लिए काम कर सकते हैं जो विद्यार्थियों और कर्मचारियों के बीच सम्मान, जिम्मेदारी और सकारात्मक संबंधों को बढ़ावा देती है। यह विभिन्न पहलों के माध्यम से किया जा सकता है, जैसे –

- नियमित सभाएँ।
- विद्यार्थी मान्यता कार्यक्रम
- सकारात्मक संबंध बनाने पर केंद्रित कुशल

सुसंगत अनुशासन नीतियाँ : –प्राचार्य स्टाफ़ के साथ मिलकर सुसंगत अनुशासन नीतियाँ विकसित और लागू कर सकते हैं जो निष्पक्ष, पारदर्शी और लगातार लागू हों। इन नीतियों को विद्यार्थियों और अभिभावकों को स्पष्ट रूप से बताया जाना चाहिए, और स्टाफ़ को यह सुनिश्चित करने के लिए निरंतर प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए कि उन्हें प्रभावी ढंग से कैसे लागू किया जाए ?

सुधारात्मक अभ्यास : –प्राचार्य सुधारात्मक व्यवस्था लागू कर सकते हैं, जो विद्यार्थियों को दंडित करने के बजाय क्षति की प्रतिपूर्ति और रिश्तों को बहाल करने पर ध्यान केंद्रित करते हैं। इसमें शामिल हो सकते हैं –

- सहकर्मी मध्यस्थता,
- बैठकें और सम्मेलन, जो विद्यार्थियों को अपने कार्यों की जिम्मेदारी लेने और चीजों को सही करने की दिशा में काम करने के अवसर प्रदान करते हैं।

सकारात्मक व्यवहार हस्तक्षेप और सहायता (PBIS):-प्राचार्य **PBIS** ढांचे को लागू कर सकता है, जो अनुशासन के लिए एक सक्रिय दृष्टिकोण है जो सकारात्मक व्यवहार को सुदृढ़ करने और अतिरिक्त सहायता

की आवश्यकता वाले विद्यार्थियों को लक्षित सहायता प्रदान करने पर केंद्रित है। इसमें पुरस्कार और प्रोत्साहन की एक प्रणाली, साथ ही परामर्श या शैक्षणिक हस्तक्षेप जैसे व्यक्तिगत समर्थन शामिल हो सकते हैं।

अभिभावकों की भागीदारी : –प्राचार्य विद्यालय की अनुशासन नीतियों और प्रथाओं में अभिभावकों को शामिल करने के लिए काम कर सकते हैं, इनपुट और फीडबैक के लिए अवसर प्रदान कर सकते हैं, साथ ही उन परिवारों के लिए संसाधन और सहायता भी प्रदान कर सकते हैं जो घर पर व्यवहार संबंधी समस्याओं से जूझ रहे हों।

कुल मिलाकर, प्राचार्य का यह दायित्व है कि वह विद्यालय के माहौल को सकारात्मक बनाने के महत्व पर जोर दे ताकि विद्यार्थियों को सकारात्मक विकल्प बनाने और उनके कार्यों की जिम्मेदारी लेने में सहायता हो सके , साथ ही जब आवश्यक हो तो लक्षित समर्थन और हस्तक्षेप भी प्रदान करे । प्राचार्य लगातार और सहयोगात्मक प्रयासों के माध्यम से, विद्यालय में अनुशासन की संस्कृति का निर्माण कर सकता है जो सभी विद्यार्थियों के लिए सम्मान, जिम्मेदारी और सफलता को बढ़ावा देता है।

16. वित्तीय योजना

ज़रूरतों का आकलन करें : –प्राचार्य को विद्यालय की वित्तीय ज़रूरतों और प्राथमिकताओं की पहचान करने के लिए पूरी तरह से ज़रूरतों का आकलन करना चाहिए। इसमें शामिल हो सकते हैं–
• मौजूदा बजट और वित्तीय रिपोर्ट की समीक्षा करना।
• नामांकन और जनसांख्यिकीय डेटा का विश्लेषण करना।
• निवेश के प्रमुख क्षेत्रों की पहचान करने के लिए कर्मचारियों और हितधारकों के साथ परामर्श करना।

वित्तीय लक्ष्य निर्धारित करें : –ज़रूरतों के आकलन के आधार पर, प्राचार्य को विद्यालय के वित्तीय लक्ष्य निर्धारित करने चाहिए जो स्कूल के दृष्टिकोण और उद्देश्यों के साथ संरेखित हों। इनमें शामिल हो सकते हैं
• नए कार्यक्रमों या पहलों में निवेश करना।
• सुविधाओं और बुनियादी ढांचे को उन्नत करना।
• स्टाफ़िंग और पेशेवर विकास के अवसरों का विस्तार करना।

बजट तैयार करें : –प्राचार्य को एक विस्तृत बजट तैयार करना चाहिए जिसमें आगामी वर्ष के लिए विद्यालय की अनुमानित आय और व्यय का विवरण हो। यह बजट विद्यालय के लक्ष्यों और प्राथमिकताओं के अनुरूप होना चाहिए और इसकी नियमित रूप से समीक्षा और अद्यतनीकरण किया जाना चाहिए ।

फंडिंग स्रोतों की पहचान करें : –प्राचार्य को विद्यालय के वित्तीय लक्ष्यों का समर्थन करने के लिए संभावित फंडिंग स्रोतों की पहचान करनी चाहिए। इनमें शामिल हो सकते हैं –
• केवीएस अनुदान।
• निजी दान या धन उगाहने वाली गतिविधियाँ।
प्राचार्य को मौजूदा संसाधनों को अनुकूलित करने के अवसरों का भी पता लगाना चाहिए, जैसे –

• लागत बचत उपायों के माध्यम से
• राजस्व सृजन गतिविधियाँ।

वित्तीय प्रदर्शन की निगरानी करें : –प्राचार्य को विद्यालय के वित्तीय प्रदर्शन की नियमित रूप से निगरानी करनी चाहिए ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि वह अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए सही रास्ते पर चल रहा है या नहीं। इसमें शामिल हो सकते हैं –
• नियमित बजट समीक्षा
• वित्तीय ऑडिट, और राजस्व
• व्यय का निरंतर विश्लेषण ताकि ऐसे क्षेत्रों या संभावित अवसरों की पहचान की जा सके जिन पर ध्यान देने की विशेष आवश्यकता है।

17. प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग

ऊर्जा–कुशल प्रथाओं को लागू करना : –"ग्रीन स्कूल प्रोजेक्ट" को अपनाकर विद्यालय ऊर्जा जैसी कुशल प्रथाओं को लागू करने पर ध्यान केंद्रित कर सकता है जैसे –
• ऊर्जा–कुशल प्रकाश उपकरणों का उपयोग करना।
• उपयोग में न होने पर इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों को बंद करना और
• कक्षाओं और विद्यालय के अन्य क्षेत्रों में ऊर्जा की खपत को कम करना।

नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों का विकास करना : –विद्यालय नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों के विकास की संभावना तलाश सकता है जैसे –
• सौर पैनल,
• पवन टर्बाइन या
• जलविद्युत जिससे विद्यालय के लिए बिजली पैदा की जा सके।

प्राकृतिक प्रकाश और वेंटिलेशन को शामिल करना : –प्राकृतिक प्रकाश और वेंटिलेशन को शामिल करने के लिए विद्यालय कक्षाओं और अन्य स्थानों को इस प्रकार डिज़ाइन कर सकता है, जिससे कृत्रिम प्रकाश और एयर कंडीशनिंग की आवश्यकता कम हो जाती है।

जल संरक्षण : –विद्यालय जल संरक्षण प्रथाओं को लागू कर सकता है जैसे –
• कम प्रवाह वाले नल और शौचालय स्थापित करना।
• सिंचाई के लिए वर्षा जल संचयन प्रणाली का उपयोग करना।
• उपयोग किए गए पानी के लिए पुनर्चक्रण संयंत्र।

संधारणीय प्रथाओं को बढ़ावा देना : –विद्यालय संधारणीय प्रथाओं को बढ़ावा दे सकता है जैसे –
• पुनर्चक्रण, खाद बनाना और पर्यावरण के अनुकूल उत्पादों का उपयोग करना।
• अपशिष्ट को कम करना और संसाधनों का संरक्षण करना।

आउटडोर लर्निंग स्पेस बनाना : –स्कूल आउटडोर लर्निंग स्पेस बना सकता है जैसे –

• उद्यान, प्रकृति के रास्ते और आउटडोर कक्षाएँ।
• विद्यार्थियों को पर्यावरण और संधारणीयता के बारे में सीखने के अवसर प्रदान करना।

पर्यावरण शिक्षा में विद्यार्थियों को शामिल करना :-जैसा कि नवीन शिक्षा नीति-**2020** पर जोर दिया गया है, विद्यालय पाठ्यक्रम में पर्यावरण शिक्षा को शामिल कर सकता है, जिससे विद्यार्थियों को प्राकृतिक संसाधनों के महत्व और पर्यावरण की रक्षा में उनकी भूमिका को समझने में मदद मिलेगी।

18.व्यावसायिक शिक्षा

विद्यार्थियों की रुचियों और आवश्यकताओं का आकलन :-प्राचार्य के रूप में मैं व्यावसायिक शिक्षा से संबंधित विद्यार्थियों की रुचियों और आवश्यकताओं का आकलन करने के लिए शिक्षकों और कर्मचारियों के साथ काम कर सकता हूँ। इसमें सर्वेक्षण, साक्षात्कार या डेटा संग्रह के अन्य रूप शामिल हो सकते हैं ताकि यह निर्धारित किया जा सके कि कौन से व्यावसायिक कार्यक्रम विद्यार्थियों के लिए सबसे अधिक प्रासंगिक और आकर्षक होंगे।

स्थानीय व्यवसायों और उद्योगों के साथ साझेदारी विकसित करना :-हम विद्यार्थियों को इंटर्नशिप, जॉब शैडोइंग और अन्य कार्य-आधारित सीखने के अवसरों तक पहुँच प्रदान करने के लिए स्थानीय व्यवसायों और उद्योगों के साथ साझेदारी विकसित करने को प्राथमिकता दे सकते हैं। ये साझेदारियाँ यह सुनिश्चित करने में भी मदद कर सकती हैं कि विद्यालय के व्यावसायिक कार्यक्रम, स्थानीय नौकरी एवं बाजार की ज़रूरतों के अनुरूप हों।

पाठ्यक्रम में व्यावसायिक शिक्षा को एकीकृत करना :-प्राचार्य **NCFSE-2023** के अनुसार विद्यालय के पाठ्यक्रम में व्यावसायिक शिक्षा को एकीकृत करने के लिए शिक्षकों और कर्मचारियों के साथ काम कर सकते हैं ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि विद्यार्थियों के पास प्रासंगिक और उच्च-गुणवत्ता वाले व्यावसायिक पाठ्यक्रमों और कार्यक्रमों तक पहुँच हो। इसमें नए पाठ्यक्रम विकसित करना या व्यावसायिक सामग्री को शामिल करने के लिए मौजूदा पाठ्यक्रमों को संशोधित करना शामिल हो सकता है।

शिक्षकों के लिए व्यावसायिक अवसर प्रदान करना :-प्राचार्य शिक्षकों के लिए व्यावसायिक विकास के अवसर प्रदान करने को प्राथमिकता दे सकते हैं ताकि उन्हें व्यावसायिक शिक्षा से संबंधित अपने कौशल और ज्ञान को विकसित करने में मदद मिल सके। हम मास्टर प्रशिक्षकों को भी शामिल कर सकते हैं। इसमें व्यावसायिक पाठ्यक्रमों को डिजाइन करने और वितरित करने के तरीके के साथ-साथ विद्यार्थियों के लिए कार्य-आधारित सीखने के अवसर प्रदान करने के लिए स्थानीय व्यवसायों और उद्योगों के साथ काम करने के तरीके पर प्रशिक्षण शामिल हो सकता है।

व्यावसायिक शिक्षा का समर्थन करने के लिए संसाधन आवंटित करना :-प्राचार्य व्यावसायिक शिक्षा का समर्थन करने के लिए संसाधन आवंटित करने के लिए विद्यालय, प्रशासकों और बजट योजनाकारों के साथ काम कर सकता है, जैसे उपकरण, सामग्री और कर्मचारियों के लिए धन।

विद्यार्थियों की प्रगति और सफलता पर नज़र रखना : –प्राचार्य व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रमों में विद्यार्थी प्रगति और सफलता पर नज़र रखने को प्राथमिकता दे सकता है, निर्णय लेने और विद्यालय में व्यावसायिक शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करने के लिए डेटा का उपयोग कर सकता है।

19. स्थानीयता

सामुदायिक संसाधनों तक पहुँच : –विद्यालय ऐसे समुदाय में स्थित हो सकता है जो कई तरह के संसाधन प्रदान करता है जिनका उपयोग शैक्षणिक कार्यक्रम को बढ़ाने के लिए किया जा सकता है, जैसे पुस्तकालय, संग्रहालय या सांस्कृतिक केंद्र। हम विद्यार्थियों को व्यावहारिक शिक्षण अनुभव प्रदान करने के लिए इन संसाधनों के साथ साझेदारी करने की रणनीतियाँ शामिल कर सकते हैं।

उद्योग या व्यवसाय से निकटता : –विद्यालय ऐसे उद्योग या व्यवसाय क्षेत्र के पास स्थित हो सकता है जो साझेदारी या इंटर्नशिप के अवसर प्रदान करता है जो विद्यार्थियों को विशिष्ट क्षेत्रों में कौशल और ज्ञान विकसित करने में मदद कर सकता है। हम विद्यार्थियों के लिए प्रासंगिक शिक्षण अवसर बनाने के लिए इन संगठनों के साथ जुड़ने को प्राथमिकता दे सकते हैं।

प्राकृतिक या पर्यावरणीय संसाधन : –विद्यालय ऐसे क्षेत्र में स्थित हो सकता है जो पार्क, जलमार्ग या जंगल जैसे अद्वितीय प्राकृतिक या पर्यावरणीय संसाधन प्रदान करता है। हम इन संसाधनों को अकादमिक कार्यक्रम में शामिल करने पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं, जिससे विद्यार्थियों को प्राकृतिक दुनिया के बारे में जानने और पर्यावरण प्रबंधन कौशल विकसित करने के अवसर मिल सकें।

सांस्कृतिक या भाषाई विविधता : –विद्यालय ऐसे समुदाय में स्थित हो सकता है जो सांस्कृतिक या भाषाई रूप से विविधतापूर्ण है, जिससे विद्यार्थियों को अलग-अलग दृष्टिकोणों और पृष्ठभूमि के बारे में जानने और उनकी सराहना करने के अवसर मिलते हैं। हम एक समावेशी और सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षण वातावरण बनाने को प्राथमिकता दे सकते हैं जो विविधता का सम्मान करता है और समानता को बढ़ावा देता है।

स्वास्थ्य या कल्याण संसाधनों तक पहुँच : –विद्यालय स्वास्थ्य या कल्याण संसाधनों जैसे कि अस्पताल, क्लीनिक या खेल सुविधाओं के पास स्थित हो सकता है जिनका उपयोग विद्यार्थियों के स्वास्थ्य और कल्याण को बढ़ावा देने के लिए किया जा सकता है। हम विद्यार्थियों के लिए स्वास्थ्य और कल्याण शिक्षा और प्रोग्रामिंग प्रदान करने के लिए इन संसाधनों के साथ साझेदारी करने की रणनीतियों को शामिल कर सकते हैं।

20.सीखने के प्लेटफॉर्म

दीक्षा : –दीक्षा शिक्षकों के साथ-साथ विद्यार्थियों के लिए एक राष्ट्रीय डिजिटल अवसंरचना है, जो इंटरैक्टिव ई-बुक, ऑडियो और वीडियो सामग्री और ऑनलाइन पाठ्यक्रमों सहित कई संसाधनों तक पहुँच प्रदान करती है। इस प्लेटफ़ॉर्म पर निष्ठा मॉड्यूल भी पेश किए जाते हैं।

स्वयं : –स्वयं एक ऑनलाइन शिक्षण प्लेटफ़ॉर्म है जो भारत के प्रमुख विश्वविद्यालयों और संस्थानों से पाठ्यक्रम प्रदान करता है, जिसमें विषयों और स्तरों की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है।

ई–पाठशाला : –ई–पाठशाला एक ऑनलाइन पोर्टल है जो विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिए डिजिटल पाठ्यपुस्तकों, ऑडियो और वीडियो सामग्री और अन्य शिक्षण संसाधनों तक पहुँच प्रदान करता है।

मुक्त शैक्षिक संसाधनों का राष्ट्रीय भंडार (एनआरओईआर) : –एनआरओईआर सभी के लिए मुक्त शैक्षिक संसाधनों का एक डिजिटल भंडार है, जो ई–बुक, ऑडियो और वीडियो सामग्री और ऑनलाइन पाठ्यक्रमों सहित कई संसाधनों तक पहुँच प्रदान करता है।

राष्ट्रीय शिक्षक मंच (एनटीपी) : –एनटीपी एक ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म है जो शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों, कार्यशालाओं और मेंटरशिप अवसरों सहित कई व्यावसायिक विकास संसाधनों तक पहुँच प्रदान करता है।

राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संवर्धित शिक्षा कार्यक्रम (एनपीटीईएल) : –एनपीटीईएल एक ऑनलाइन मंच है जो इंजीनियरिंग, विज्ञान और अन्य तकनीकी क्षेत्रों में पाठ्यक्रमों और प्रमाणन कार्यक्रमों तक पहुंच प्रदान करता है।

21. मानसिक स्वास्थ्य और शारीरिक तंदुरुस्ती

मनोदर्पण : –

सुविधाएँ : प्राचार्य स्कूल की खेल और शारीरिक विकास सुविधाओं को विकसित करने या सुधारने पर ध्यान केंद्रित कर सकता है, जिसमें मैदान, कोर्ट और जिम शामिल हैं, ताकि विद्यार्थियों को शारीरिक गतिविधि के लिए उच्च–गुणवत्ता वाले स्थानों तक पहुँच प्रदान की जा सके।

पाठ्यक्रम एकीकरण : प्रिंसिपल स्कूल के पाठ्यक्रम में शारीरिक शिक्षा को एकीकृत करने का लक्ष्य रख सकता है, यह सुनिश्चित करते हुए कि विद्यार्थियों को नियमित निर्देश और उनके शारीरिक कौशल और ज्ञान को विकसित करने के अवसर मिलें।

एथलेटिक कार्यक्रम : प्राचार्य एथलेटिक कार्यक्रमों के विकास को प्राथमिकता दे सकता है जो विद्यार्थियों को टीम के खेलों में भाग लेने, अन्य विद्यालयों के खिलाफ प्रतिस्पर्धा करने और उनकी टीमवर्क और नेतृत्व कौशल विकसित करने के अवसर प्रदान करते हैं।

स्वास्थ्य और कल्याण : प्राचार्य समय–समय पर स्वास्थ्य जांच, स्वस्थ भोजन कार्यक्रम, मानसिक स्वास्थ्य सहायता और स्वास्थ्य शिक्षा जैसी पहलों के माध्यम से विद्यार्थी स्वास्थ्य और कल्याण को बढ़ावा देने पर ध्यान केंद्रित कर सकता है।

सामुदायिक जुड़ाव : प्राचार्य स्थानीय खेल संगठनों, अभिभावकों और समुदाय के सदस्यों के साथ साझेदारी बनाते हुए, खेल और शारीरिक विकास पहलों में विद्यालय समुदाय को शामिल करने का लक्ष्य रख सकता है।

व्यावसायिक विकास : प्राचार्य शिक्षकों और प्रशिक्षकों के लिए व्यावसायिक विकास के अवसरों को प्राथमिकता दे सकते हैं, जिससे वे विद्यार्थी एथलीटों के लिए उच्च–गुणवत्तापूर्ण निर्देश और सहायता प्रदान कर सकें।

समानता और समावेशन : प्राचार्य खेल और शारीरिक विकास में समानता और समावेशन को बढ़ावा देने पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि सभी विद्यार्थियों को उनकी पृष्ठभूमि या क्षमता की परवाह किए बिना अवसरों और संसाधनों तक पहुँच प्राप्त हो।

22. आकर्षक परिसर

- **भूनिर्माण :** –सुंदर और स्वागत करने वाला वातावरण बनाने के लिए विद्यालय भूनिर्माण में निवेश कर सकता है, जिसमें उद्यान, पेड़ और फूल जैसी सुविधाएँ शामिल हैं।
- **कला और भित्ति चित्र :** –दीवार पत्रिका अभियान के तहत विद्यालय दीवारों और इमारतों को सजाने के लिए भित्ति चित्र और कलाकृतियाँ बनवा सकता है, जिससे रचनात्मक और रंगीन माहौल मिल सके।
- **पर्यावरणीय स्थिरता :** –पर्यावरण के अनुकूल सुविधाएँ लागू करके विद्यालय पर्यावरणीय स्थिरता को बढ़ावा दे सकता है जैसे –
- सौर पैनल,
- हरी छतें, और
- वर्षा उद्यान।
- **बाहरी शिक्षण स्थान :** –विद्यालय बाहरी शिक्षण स्थान बना सकता है जैसे –
- उद्यान।
- प्रकृति पथ।
- बाहरी कक्षाएँ, जिससे विद्यार्थियों को एक अनूठा और आकर्षक शिक्षण अनुभव मिले।
- **खेल और मनोरंजन सुविधाएँ :** –विद्यालय उच्च गुणवत्ता वाले खेल और मनोरंजन सुविधाओं में निवेश कर सकता है जैसे –
- व्यायामशाला,
- खेल के मैदान, और मानक खेल के मैदान जो शारीरिक गतिविधि और स्वस्थ जीवन को बढ़ावा देते हैं।
- **विज्ञान और प्रौद्योगिकी प्रयोगशालाएँ :** –स्कूल अत्याधुनिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी प्रयोगशालाएँ विकसित कर सकता है जो विद्यार्थियों को व्यावहारिक शिक्षण अनुभव और अत्याधुनिक तकनीक तक पहुँच प्रदान करती हैं।
- **आधुनिक कक्षाएँ :** –विद्यालय, आरामदायक और प्रेरक शिक्षण वातावरण बनाने के लिए कक्षाओं का नवीनीकरण और आधुनिकीकरण कर सकता है, जिसमें निम्नलिखित सुविधाएँ शामिल हैं :
- स्मार्ट बोर्ड,
- एर्गोनोमिक फ़र्नीचर और
- प्राकृतिक प्रकाश व्यवस्था।

- **सामुदायिक स्थान :** –विद्यालय आकर्षक सामुदायिक स्थान का निर्माण कर सकता है जैसे–
- पुस्तकालय,
- कैफ़ेटेरिया या
- विद्यार्थी–लाउंज, छात्रों और कर्मचारियों को आराम, सामाजिकीकरण और सहयोग के लिए अवसर/स्थान प्रदान करना।